Toppersnotes
Unleash the topper in you

सहायक सांख्यिकी अधिकारी

Assistant Statistical Officer (ASO)

राजस्थान लोक सेवा आयोग

भाग – 1

सामान्य अध्ययन (राजस्थान)

SIERRA INNOVATIONS

RAJASTHAN ASO

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ट सं.
	राजस्थान का भूगोल	
1.	राजस्थान की उत्पत्ति, स्थिति, विस्तार एवं क्षेत्रफल	1
2.	राजस्थान का भौतिक प्रदेश एवं विभाग	7
3.	राजस्थान का अपवाह तंत्र	19
4.	राजस्थान की झीलें	27
5.	राजस्थान की जलवायु	32
6.	राजस्थान में मृदा संसाधन	39
7.	राजस्थान में वन–संसाधन एवं वनस्पति	44
8.	राजस्थान में खनिज सम्पदा	49
9.	राजस्थान में ऊर्जा स्त्रोत	58
10.	राजस्थान में पशुधन	67
11.	राजस्थान में कृषि एवं सिंचाई परियोजनाएँ	71
12.	राजस्थान की जनसंख्या	81
13.	राजस्थान में वन्यजीव एवं इनका संरक्षण	84
14.	राजस्थान में उद्योग	88
	राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति	
1.	प्राचीन राजस्थान का इतिहास	94
	• परिचय	94
	• प्राचीन सभ्याताएँ	97
	• महाजनपद काल	101
	• मौर्यकाल	102
	• मौर्योत्तर काल	102
	• गुप्तकाल	102

- गुप्तोत्तर काल 103

2. मध्यकाल राजस्थान का इतिहास 104
   - प्रमुख राजवंश एवं उनकी विशेषताएँ
   - राजस्थान की रियासतें और अंग्रेजों के साथ संधियाँ
3. आधुनिक राजस्थान का इतिहास 146
   - 1857 की क्रांति 146
   - प्रमुख किसान आन्दोलन 148
   - प्रमुख जनजातीय आन्दोलन 152
   - प्रमुख प्रजामण्डल आन्दोलन 153
   - राजस्थान का एकीकरण 157
4. राजस्थान कला एवं संस्कृति 162
   - राजस्थान के त्यौहार 162
   - राजस्थान के लोक देवता 168
   - राजस्थान की लोक देवियाँ 173
   - राजस्थान के लोक सन्त एवं सम्प्रदाय 177
   - राजस्थान के लोकगीत 183
   - राजस्थान की लोकगायन की शैलियाँ 184
   - राजस्थान के संगीत 185
   - राजस्थान के लोक नृत्य 186
   - राजस्थान के लोकनाट्य 190
   - राजस्थान की जनजातियाँ 193
   - राजस्थान की चित्रकला 196
   - राजस्थान की हस्तकलाएँ 202
   - राजस्थान का साहित्य 205
   - राजस्थान की प्रमुख बोलियाँ 211
   - राजस्थान के प्रमुख लोक वाद्य यंत्र 213
5. राजस्थान की स्थापत्य कला 218
   - किले एवं स्मारक 218

- राजस्थान के धार्मिक स्थल 227
- राजस्थान की सामाजिक प्रथाएँ एवं रीति–रिवाज 232
- राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व 234
- वेश–भूषा व आभूषण 238

राजस्थान की उत्पत्ति

अंगारालैण्ड

पैंजिया का उत्तरी भाग जिससे उत्तरी अमेरिका, यूरोप और उत्तरी एशिया का निर्माण हुआ है ।

गोंडवानालैण्ड

पैंजिया का दक्षिणी भाग जिससे दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका, दक्षिणी एशिया, ऑस्ट्रेलिया तथा अंटार्कटिका का निर्माण हुआ है ।

टेथिस सागर

यह एक भूअन्नति है जो अंगारालैण्ड व गोंडवानालैण्ड के मध्य स्थित है ।

Note– राजस्थान का निर्माण

GT

G – गोंडवाना लैण्ड
अरावली
हाडौती

T – टेथिस सागर
मरूस्थल
मैदान

भौगोलिक प्रदेश

अरावली व हाडौती भारत के प्रायद्वीप पठार का हिस्सा है जबकि मरूस्थल व मैदानी भाग भारत के उत्तरी विशाल मैदान का हिस्सा है ।

A- राजस्थान : स्थिति, विस्तार एवं आकार

भारत

उत्तर पश्चिम	

विश्व

	उत्तर पूर्व

एशिया

दक्षिण पश्चिम	

- ग्लोबीय स्थिति में राजस्थान उत्तर पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है ।

B- विस्तार

- अक्षांश – $23^0 3'$ से $30^0 12'$ उत्तरी अक्षांश
- देशांतर – $69^0 30'$ से $78^0 17'$ पूर्वी देशांतर
- क्षेत्रफल – 3,42,239.74 वर्ग किमी. (1,32,140 वर्ग मील)

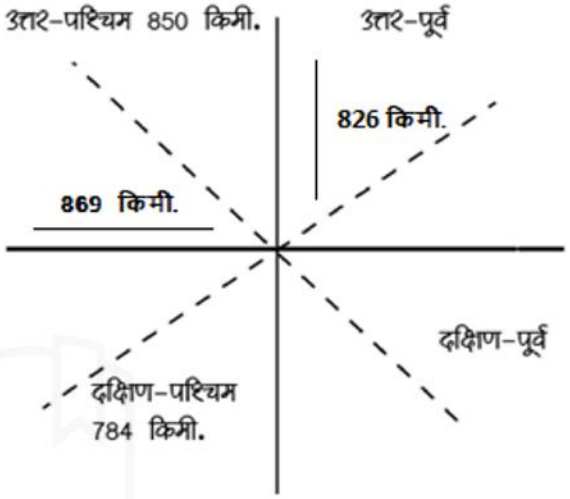

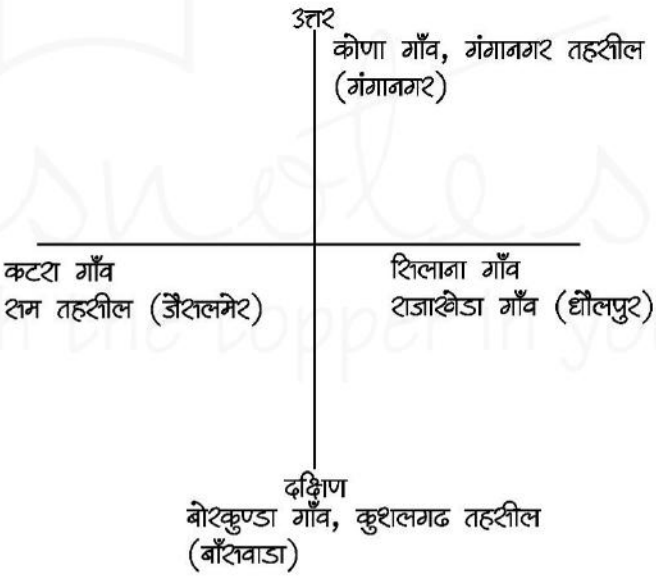

C- आकार

Rhombus – T. H. हैडले ने कहा
विषम चतुष्कोणीय (रोहम्बस)
पतंगाकार

राजस्थान के क्षेत्रफल संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य

1. राजस्थान का क्षेत्रफल 342239.74 वर्ग किमी है ।
2. यह भारत के क्षेत्रफल का 10.41 प्रतिशत है ।
3. विश्व क्षेत्रफल का राजस्थान 0.25 प्रतिशत धारण करता है ।
4. राजस्थान भारत का सबसे बडा राज्य है ।
5. राजस्थान का सबसे बडा जिला जैसलमेर है । 38401 वर्ग किमी इसका क्षेत्रफल है ।
6. जैसलमेर सम्पूर्ण राजस्थान का 11.22 प्रतिशत क्षेत्रफल धारण करता है ।
7. धौलपुर राजस्थान का सबसे छोटा जिला है जिसका क्षेत्रफल 3034 वर्ग किमी है ।
8. धौलपुर सम्पूर्ण राज्य का .89 प्रतिशत क्षेत्रफल धारण करता है ।
9. जैसलमेर धौलपुर से 12.67 गुणा बडा है ।
10. कर्क रेखा राज्य के डुंगरपुर की सीमा को छूते हुए तथा बांसवाडा के मध्य से होकर गुजरती है ।
11. कर्क रेखा की लम्बाई राज्य में 26 किमी है ।
12. कर्क रेखा पर सबसे लम्बा दिन 13 घंटे 27 मिनट का होता है जो 21 जून को होता है । यह कर्क संक्रांति कहलाता है ।
13. राज्य में पूर्व से पश्चिम समय अंतराल 35 मिनट 8 सैकेण्ड का है ।
14. राज्य का मध्य गांव गगराना नागौर है ।

प्रमुख देश		राजस्थान का क्षेत्रफल (बडा)
जर्मनी	–	बराबर
जापान	–	बराबर
ब्रिटेन	–	दोगुना
श्रीलंका	–	5 गुना
इजराइल	–	17 गुना

राजस्थान के क्षेत्रफल के अनुसार सबसे बडे एवं सबसे छोटे जिले

बडे व छोटे जिले

जैसलमेर	(38401 km^2)	धौलपुर	(3034 km^2)
बीकानेर	(30247 km^2)	दौसा	(3432 km^2)
बाडमेर	(28387 km^2)	डूँगरपुर	(3770 km^2)
जोधपुर	(22850 km^2)	राजसमन्द	(3860 km^2)
नागौर	(17716 km^2)	प्रतापगढ	(4449 km^2)

(c) राजस्थान की सीमाः-

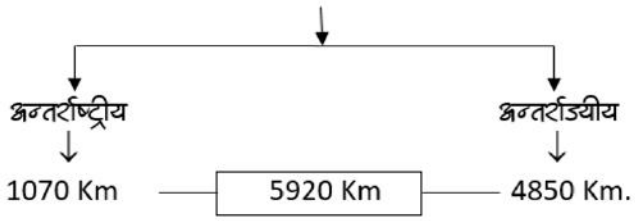

अन्तर्राज्यीय सीमा एवं उन पर स्थित जिले

सीमा– 4850 किमी.

पडोसी राज्य	उनकी सीमा पर राजस्थान के जिले
पंजाब (89 किमी.)	हनुमानगढ, गंगानगर
हरियाणा (1262 किमी.)	जयपुर, भरतपुर, हनुमानगढ, सीकर, चुरू, झुंझुनु, अलवर
उत्तरप्रदेश (877 किमी.)	भरतपुर, धौलपुर
मध्यप्रदेश (1600 किमी.)	धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, भीलवाडा, कोटा, बांसवाडा, बांरा, झालवाड, प्रतापगढ, चित्तोडगढ
गुजरात (1022 किमी.)	बाडमेर, जालौर, सिरोही, उदयपुर, डुंगरपुर, बांसवाडा

- भारत के मानचित्र में निरपेक्ष स्थिति उत्तर-पश्चिम में है ।
- भारत मे किसी भी स्थान की निरपेक्ष स्थिति – नागपुर (महाराष्ट्र) से ज्ञात की जाती है ।
- राजस्थान में किसी भी स्थान की निरपेक्ष स्थिति मेडता (नागौर) से ज्ञात की जाती है ।

सूर्य की किरणों की निरपेक्ष स्थिति

- सूर्य की सर्वाधिक सीधी किरणों वाला जिला – बाँसवाडा (21 जून)
- सर्वाधिक तिरछी किरणों वाला जिला – श्री गंगानगर (22 दिसम्बर)
- रात व दिन की अवधि बराबर – 21 मार्च, 23 सितम्बर
- सर्वप्रथम सूर्योदय व सूर्यास्त – सिलाना (धौलपुर)
- सबसे अन्त में सूर्योदय व सूर्यास्त – कटरा गाँव (सम, जैसलमेर)

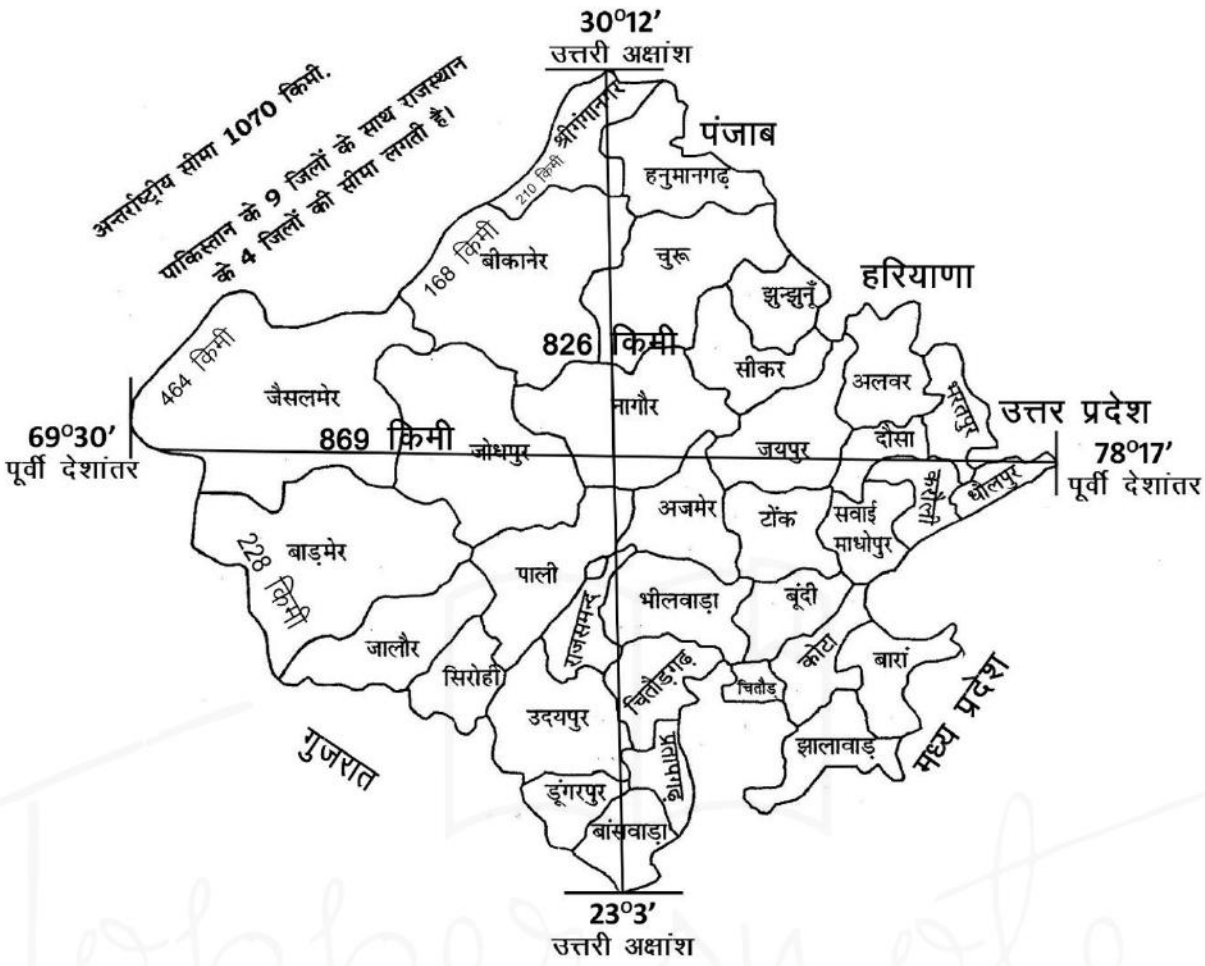

नोट –

(1) राजस्थान के वे जिले जो दो राज्यों के साथ सीमा बनाते हैः-

- हनुमानगढ – पंजाब . हरियाणा
- भरतपुर – हरियाणा . U.P.
- धौलपुर – U.P. + M.P.
- बाँसवाडा – M.P. गुजरात

(2) कोटा व चित्तौडगढः- राजस्थान के वे जिले है जो एक राज्य (M.P.) से दो बार सीमा बनाते है ।

(3) कोटा :- राजस्थान का वह जिला है जो राज्य के साथ दो बार सीमा बनाता है वह अविखण्डित है ।

(4) चित्तौडगढः- राजस्थान का वह जिला है जो राज्य के साथ दो बार सीमा बनाता है व विखण्डित है ।

(5) भीलवाडाः- चित्तौडगढ को 2 भागो में विखण्डित करता है ।

पाक प्रान्त

- पंजाब
  - बहावलनगर
  - बहावलपुर
  - रहीमयारखानपुर
- सिन्ध
  - घोटक्की
  - सुक्कर
  - संधार
  - खैरपुर
  - अमरकोट
  - थारपारकर

अन्तर्राज्यीय सीमा पर

सर्वाधिक सीमा
झालावाड (560 किमी.)
(M.P.)

सबसे कम
बाड़मेर (14 किमी.)
(गुजरात)

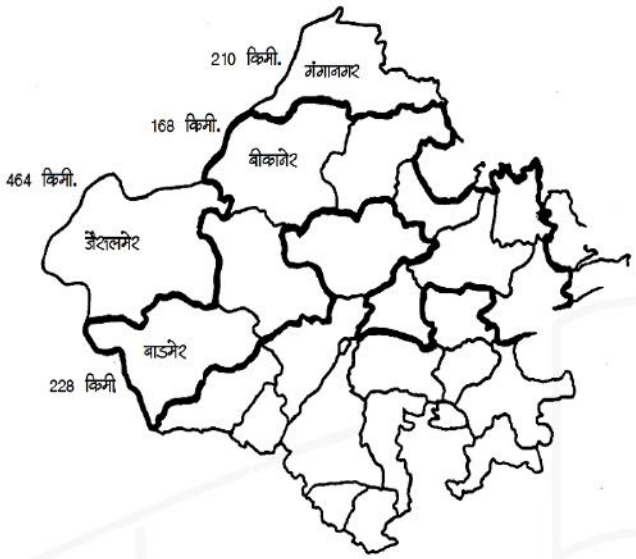

- 25 जिले : राजस्थान के सीमावर्ती जिले
- 23 जिले : अन्तर्राज्यीय सीमावर्ती
- 4 जिले : अन्तर्राष्ट्रीय सीमावर्ती
- 2 जिले : अन्तर्राज्यीय व अन्तर्राष्ट्रीय सीमावर्ती (श्रीगंगानगर . बाड़मेर)
  8 जिले : राजस्थान के वे जिले जो अन्तः स्थलीय (Land locked) सीमा बनाते हैं ।

पाली सर्वाधिक 8 जिलों के साथ सीमा बनाता है । जो निम्न हैं –
बाड़मेर, जोधपुर, जालौर, सिरोही, उदयपुर, राजसमंद, अजमेर, नागौर ।

अजमेर :- चित्तौड़गढ के बाद राजस्थान का दूसरा विखण्डित जिला
राजसमन्द :- राजसमन्द अजमेर का दो भागों में विखण्डित करता है ।
इसका जिला मुख्यालय इसके नाम से नहीं है ।
राजनगर राजसमन्द का जिला मुख्यालय है ।
नागौर :- नागौर सर्वाधिक संभाग मुख्यालयों के साथ सीमा बनाता है ।
(जयपुर, अजमेर, जोधपुर, बीकानेर)

सीमावर्ती विवाद

मानगढ हिल्स विवाद
स्थिति = बाँसवाड़ा
विवाद = राजस्थान–गुजरात के मध्य

1. पाकिस्तान का बहावलपुर सर्वाधिक सीमा गंगानगर के साथ बनाता है ।
2. न्यूनतमक सीमा बाड़मेर के साथ बनाता है ।
3. पाकिस्तान के 9 जिले भारत के साथ सीमा बनाते हैं ।
4. पाकिस्तान के 6 जिले जैसलमेर के साथ सीमा बनाते हैं ।
5. भारत के 4 जिले पाकिस्तान के साथ सीमा बनाते हैं ।
6. जैसलमेर सर्वाधिक सीमा पाकिस्तान के साथ बनाता है ।
7. बीकानेर सबसे कम सीमा पाकिस्तान के साथ बनाता है ।
8. नाम– सर सिरील रेड रेडक्लिफ रेखा
9. निर्धारण तिथि – 17 अगस्त 1947
10. शुरूआत – हिन्दूमलकोट
11. अंत – शाहगढ (बाड़मेर)
12. राजस्थान की कुल सीमा का 18% (1070 किमी.) है।
13. पाकिस्तान प्रान्त राज्य = 2 (पंजाब व सिन्ध)
14. श्रीगंगानगर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर सबसे निकटतम जिला मुख्यालय है ।
15. बीकानेर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा पर सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय है ।
16. धौलपुर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा से सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय है ।
17. बीकानेर सबसे कम सीमा पाकिस्तान के साथ बनाता है ।
18. शुरूआत – हिन्दूमलकोट
19. अंत – शाहगढ(बाड़मेर)

Start — हिन्दुमलकोट (श्रीगंगानगर) 210 किमी.
↓
बीकानेर 168 किमी. (Minium)
↓
जैसलमेर 464 किमी. (Maxium)
↓
End — शाहगढ (बाड़मेर) 228 किमी.

नवीनतम जिले

26 अजमेर (1 नवम्बर, 1956)
27 धौलपुर (15 अप्रैल, 1982)
28 बारां (10 अप्रैल 1991)
29 दौसा (10 अप्रैल 1991)
30 राजसमंद (10 अप्रैल 1991)
31 हनुमानगढ (12 जुलाई 1994)
32 करौली (19 जुलाई 1997)
33 प्रतापगढ (26 जनवरी 2008)

राजस्थान के प्रादेशिक के परिवर्तन का स्वरूप एवं वर्तमान नाम

प्राचीन नाम	बदला स्वरूप	वर्तमान नाम
योद्धेय	जोहयावाटी	गंगानगर
जांगल	भटनेर	बीकानेर
अहिच्छत्रपुर	अहिपुर	नागौर
गुर्जर	गुरजान्ना	मण्डोर-जोधपुर
शाकंभरी सांभर	अजयमेरू	अजमेर
श्रीमाल स्वर्णगिरि	गेलोर भीनमाल	बाडमेर
वल्ल	डुंगल	जैसलमेर
अर्बुद	चन्द्रावती	सिरोही
विराट	रामगढ	जयपुर
शिवि	चित्तौड	उदयपुर
कांठल	देवलिया	प्रतापगढ
पालन	दशपुर	झालावाड
व्याघ्रवाट	वांगड	बांसवाडा
जाबालीपुर	स्वर्णगिरि	जालौर
कुरू		भरतपुर, करौली
शौरसैन		धौलपुर
हयहय		कोटा, बूंदी
चंद्रावती		आबू, सिरोही
छप्पन मैदान		प्रतापगढ, बांसवाडा के छप्पन ग्राम समूह
मेवल		डूंगरपुर, बांसवाडा के बीच का भाग
ढूंढाड		जयपुर
थली		चुरू, सरदार शहर

29.	गंगानगर	चिंकारा
30.	सीकर	शाहीन
31.	सिरोही	डांगली मुर्गी
32.	टोंक	हंस
33.	उदयपुर	कब्र बिज्जू

राजस्थान में उद्योग

राजस्थान औद्योगिक दृष्टि से पिछडा हुआ राज्य रहा है । इस पिछडेपन का प्रमुख कारण प्राकृतिक, आर्थिक और राजनीतिक कारण उत्तरदायी रहे हे । आजादी के बाद औद्योगिक विकास का एक नई दिशा दी गई । जिसके अपेक्षित परिणाम दृष्टिगोचर होते है । राज्य में औद्योगिक पिछडेपन के निम्न कारण है ।

1. प्रतिकूल धरातलीय स्वरूप
2. पानी की कमी
3. उर्जा के साधनों की कमी
4. औद्योगिक कच्चे माल की सीमित उपलब्धता
5. तकनीकि ज्ञान की कमी
6. सीमित पूंजी निवेश
7. विरासत में मिला औद्योगिक पिछडापन
8. प्रशिक्षित श्रमिकों की कमी
9. सीमित बाजार एवं ढांचागत सुविधाओं की कमी
10. कच्चे माल की कमी
11. परिवहन साधनों की कमी
12. राजनीतिक हस्तक्षेप

राजस्थान के प्रमुख उद्योग

सूती वस्त्र उद्योग

सबसे प्राचीन व परम्परागत उद्योग

राज्य मे प्रथम सूती कपडा मील 1889 में दी कृष्णा मिल्स लिमिटेड के नाम से ब्यावर में स्थापित हुई थी । इसके पश्चात 1906 और 1925 में यहां दो और मील स्थापित हुई ।

1938 में भीलवाडा, 1942 में पाली, 1946 में गंगानगर सूती वस्त्र की मीलें स्थापित हुई ।

भीलवाडा को राजस्थान का मैनचेस्टर कहा जाता है । 2009 में केन्द्र सरकार ने इसे वस्त्र निर्यात नगर का दर्जा दिया।

- एकीकरण पूर्ण होने के समय राजस्थान में 7 सूती वस्त्र की मिलें थी।
- वर्तमान में 23 सूती वस्त्र की मिलें है।
  निजी - 17
  i. विजयकोटन मिल - विजयनगर
  ii. एडवर्ड मिल - ब्यावर
  iii. महालक्ष्मी मिल - ब्यावर

सहकारी मिलें - 3

i. श्री गंगानगर सहकारी कताई मिल - हनुमानगढ (1981)
ii. गुलाबपुरा - भीलवाडा
iii. गंगापुर सहकारी कताई मिल - भीलवाडा

स्पिनफेड - तीनों सहकारी मिलों को मिलाकर 1993 में बनाया गया ।

राजस्थान में प्रमुख सूती वस्त्र उद्योग के निम्न कारखाने है ।

एडवर्ड मिल्स	- ब्यावर
कृष्णा मिल्स	- ब्यावर
महालक्ष्मी मिल्स	- ब्यावर
आदित्य मिल्स	- किशनगढ
महाराजा श्री उम्मेद मिल्स	- पाली
मेवाड टैक्सटाइल्स	- भीलवाडा
राजस्थान स्पिनिंग एवं विविंग मिल्स	- गुलाबपुरा
मॉडर्न ग्रुप	- भीलवाडा
भीलवाडा सूटिंग-शर्टिंग	- भीलवडा
राजस्थान टैक्सटाइल्स	- भवनी मण्डी
रिलाइन्स कोमेटैक्स	- उदयपुर
विजयनगर कॉटन मिल्स	- विजयनगर
डे.सी.टी.	- श्री गंगानगर
उदयपुर कॉटन मिल्स	- उदयपुर
जयपुर स्पिनिंग एवं वीविंग मिल्स	- जयपुर
राजस्थान को-ऑपरेटिव मिल्स	- गुलाबपुरा
श्री गोपाल इण्डस्ट्रीज	- कोटा

ऊन उद्योग

राजस्थान सर्वाधिक ऊन उत्पादन करने वाला राज्य हैं । जो सम्पूर्ण देश का 40 प्रतिशत है । राज्य में ऊन उद्योग निम्न है ।

1. स्टेट वूल मिल्स - बीकानेर
2. जोधपुर ऊन फैक्ट्री
3. विदेशी आयात-निर्यात संस्था कोटा
4. वर्स्टेड स्पिनिंग मील चुरू
5. वर्स्टेड स्पिनिंग मील लाडनूं
6. वूल टेस्टिंग प्रयोगशाला - बीकानेर
7. विदेशी ऊन आयात-निर्यात केन्द्र - कोटा

चीनी उद्योग

यह सूती वस्त्र उद्योग के बाद राज्य का दूसरा बडा कृषि आधारित उद्योग है ।

राज्य में प्रथम चीनी मील 1932 में भोपाल सागर चित्तौड में स्थापित की गई । प्रथम मील व निजी मील ।

1937 में दूसरी चीनी मील दी गंगानगर शुगर मील गंगानगर में स्थापित की गई। इसके साथ चुकंदर से चीनी बनाने का कारखाना स्थापित किया गया। यह अपनी तरह का दक्षिण एशिया में पहला प्लांट था। 1956 में इसे राज्य सरकार ने अधिग्रहित कर लिया। वर्तमान में यहां शराब डिस्टलरी बनाने का कारखाना भी है।

राज्य की पहली सहकारी क्षेत्र में चीनी मील केसोराय पाटन बूंदी (1965) में स्थापित की गई। दूसरी 1976 में उदयपुर में स्थापित की गई। जिसे उदयपुर शुगर मील के नाम से जाना जाता है।

सीमेंट उद्योग

राज्य में सीमेंट उद्योग उन्नत अवस्था में है। इसके विकास की असीम संभावना भी है। क्योंकि राज्य में कच्चे माल चूने पत्थर की प्रचुर उपलब्धता है। वर्तमान में राज्य भारत का दूसरा प्रमुख सीमेंट उत्पादक राज्य है।

राज्य में प्रथम सीमेंट कारखाना 1915 में लाखेरी (बूंदी) में स्थापित किया गया। A.C.C. सीमेंट कंपनी द्वारा उत्पादन 1917 में प्रारंभ किया।

जयपुर उद्योग लिमिटेड – 1953 में सवाईमाधोपुर

i. J.K. White सीमेंट कारखाना – 1984 में गोटन (नागौर)

ii. इण्डियन रेयान इंडस्ट्रीज लिमिटेड बिडला White सीमेंट – 1988 खारियाखगार (जोधपुर)

राजस्थान के सीमेंट के बडे कारखाने निम्नलिखित है –

क्र.सं	सीमेंट इकाई	स्थान/जिला
1.	ए.सी.सी.लिमिटेड	लाखेरी (बूंदी)
2.	चित्तौडगढ सीमेंट वर्क्स	चित्तौडगढ
3.	अम्बूजा सीमेंट	खरियावास (पाली)
4.	डी.के. सीमेंट एवं वंडर सीमेंट	निम्बाहेडा (चित्तौडगढ)
5.	मंगलम सीमेंट	मोडक (कोटा)
6.	डी.के. लक्ष्मी सीमेंट	सिरोही
7.	श्री सीमेंट	ब्यावर (अजमेर)
8.	श्री राम सीमेंट	कोटा
9.	बिडला व्हाइट सीमेंट	गोटन
10.	हिन्दुस्तान सीमेंट	उदयपुर
11.	राज श्री सीमेंट	खारिया, मीठापुर (नागौर)
12.	इण्डिया सीमेंट लि.	नौखिया (बांसवाडा)
13.	अल्ट्राटेक सीमेंट	सवा. शम्भूपुरा रोड (चित्तौडगढ)
14.	बिडला कार्पोरेशन	चचेरिया (चित्तौडगढ)
15.	बिनानी सीमेंट	सिरोही (सीकर)

डी.के. सीमेंड निम्बाहेडा सर्वाधिक क्षमता वाला कारखाना है जबकि श्री राम सीमेंट कोटा न्यूनतम क्षमता वाला कारखाना है।

- जयपुर उद्योग लिमिटेड – 1953 सवाई माधोपुर
- एशिया का बडा सीमेंट कारखाना

तांबा उद्योग

राजस्थान में तांबा उद्योग भारत सरकार के उपक्रम हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड के हाथों में है। जिसकी स्थापना 1967 में खेतडी झुंझुनूँ में की गई। इसके अन्तर्गत तीन परियोजनाएं कार्यरत है।

1. खेतडी कॉपर काम्पलेक्स, खेतडी (झुंझुनूँ)
2. दरीबा ताम्र परियोजना अलवर
3. चांदमारी ताम्र परियोजना (झुंझुनूँ)

खेतडी कॉपर काम्पलेक्स देश की सबसे बडी ताम्र खनन शोधन ईकाई है।

जस्ता उद्योग

राजस्थान में जस्ता उद्योग अति प्राचीन है। यहां हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड जस्ता खनन करता है। यह उदयपुर के पास देबारी में 10 जनवरी 1996 में स्थापित किया गया था।

हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड की एक परियोजना रामपुरा अगुचा (भीलवाडा) में स्थापित किया गया है।

जस्ता प्रदावन कारखाने हिंदुस्ताान जिंक लिमिटेड ने चंदेरिया (चित्तौडगढ) में तथा देबारी में स्थापित किये गये है।

इंजनियरिंग उद्योग

राज्य में विभिन्न प्रकार के इंजनियरिंग उद्योग है। वर्तमान लगभग 51 बडे एवं मध्यम श्रेणी के इंजनियरिंग उद्योग है।

कुछ महत्वपूर्ण इंजिनियरिंग उद्योग निम्न है।

1. हिंदुस्ताान मशीन टूल्स अजमेर – भारत सरकार का उपक्रम, 1967 में स्थापित। एच.एम.टी. घडियों का उत्पादन करता है।
2. इन्स्ट्रूमेन्टेशन लिमिटेड कोटा – भारत सरकार का उपक्रम, 1964 में स्थापित। भारी मशनरी का निर्माता।
3. जयपु मेटल्स, जयपुर (बिजली के मीटर)
4. कैप्सटन मीटर कम्पनी, जयपुर और पाली (पानी के मीटर)

5. मान इन्डस्ट्रीयल कॉरपोरेशन, जयपुर (लोहे के टावर, खिडकियाँ आदि)
6. सिमको-बिडला फैक्ट्री, भरतपुर (रेल के डिब्बे एवं मशीनें)
7. नेशनल इंजीनियरिंग कम्पनी जयपुर में विभिन्न प्रकार के बाल - बियरिंग बनाने वाली और अपने प्रकार की देश में सबसे प्रमुख कम्पनी है ।
8. राजस्थान इलेक्ट्रोनिक्स कॉर्पोरेशन, जयपुर टेलीविजन
9. अवन्ती स्कूटर्स, अलवर
10. लेलैण्ड ट्रक कारखाना, अलवर
11. राजस्थान टेलीविजन इण्डस्ट्रीज, भिवाडी
12. वैगन फैक्ट्री, कोटा
13. लोको एण्ड कैरिज वर्कशॉप, अजमेर

रसायन एवं उर्वरक उद्योग

राजस्थान में राज्य सरकार द्वारा राजस्थान स्टेट कैमिकल वर्क्स की स्थापना डिंडवाना में की गई । इसके अंतर्गत तीन इकाईयां कार्यरत है ।

1. सोडियम सल्फेट वर्क्स - 1964 में स्थापित किया गया । यहां सोडियम सल्फेट बनाया जाता है ।
2. सोडियम सल्फेट संयंत्र - शुद्ध नमक बनाया जाता है ।
3. सोडियम सल्फाईट फैक्ट्री - सोडियम सल्फाईट बनाया जाता है । रासायनिक क्रिया से ।
4. राजस्थान का बडा खाद कारखाना - श्रीराम फर्टिलाइजर्स (कोटा)
5. गैस आधारित बडा व निजी कारखाना - चम्बल फर्टिलाइजर्स लि. गडेपान (कोटा)
6. प्रथम जैव उर्वरक कारखाना - डिंक उर्वरक कारखाना (भरतपुर)
7. सर्वाधिक उर्वरक कारखानें - उदयपुर

सल्फ्यूरिक एसिड का प्लांट अलवर में है ।
रासायनिक उर्वरक को हेतु कोटा में श्री राम फर्टीलाइजर उद्योग स्थापित किया गया है । दूसरा उद्योग गढेपान (कोटा) में चम्बल फर्टीलाइजर के नाम से स्थापित किया गया है । देबारी डिंक स्मेल्टर से भी रासायनिक उर्वरक का उत्पादन किया जाता है ।

नमक उद्योग

राजस्थान गुजरात व तमिलनाडु के बाद भारत में नमक उत्पादन में तीसरा स्थान रखता है । 1960 में सांभर में सांभर साल्टस लिमिटेड की स्थापना की गई । राजस्थान में नमक आधारित निम्न राज्य के उपक्रम कार्यरत है ।

1. राजस्थान स्टेट केमिकल वर्क्स, डीडवाना (1964 में स्थापित), नागौर
2. राजस्थान स्टेट केमिकल वर्क्स, डीडवाना (1968 में स्थापित)
3. राजस्थान सरकार साल्ट वर्क्स, डीडवाना (1960 में स्थापित)
4. राजस्थान सरकार साल्ट वर्क्स, पंचपद्रा (1960 में स्थापित), बाडमेर

कांच उद्योग

राजस्थान में सिलिका सैण्ड जयपुर, बीकानेर, बूंदी, धौलपुर में उत्तम श्रेणी का उपलब्ध है । राजस्थान में कांच बनाने के दो कारखाने है ।

1. धौलपुर ग्लास वर्क्स - निजी क्षेत्र का
2. दी हाई टेक्निकल प्रीसीजन ग्लास वर्क्स - गंगानगर शुगर मिल के अंतर्गत । (धौलपुर में)
3. सैमकोर ग्लास वर्क्स - कोटा (सैमसंग टी.वी. की पिक्चर ट्यूब बनाती है ।)

पर्यटन उद्योग

राजस्थान में 2019 में कुल 5.22 करोड देशी और 16.60 करोड विदेशी पर्यटक आए राजस्थान पर्यटकों के लिए प्रमुख आकर्षक केन्द्र है । भारत में आने वाला हर तीसरा पर्यटक राजस्थान आता है । पयर्ट नजन उद्योग का दर्जा - 2004

राज्य में 1955 में पर्यटन निदेशालय की स्थापना की गई । 1978 में राजस्थान पर्यटक विकास निगम (RTDC) की स्थापना की गई ।
विश्व पर्यटन दिवस - 27 दिसम्बर

राज्य के पर्यटन में एक नवीन अध्याय का प्रारम्भ उस समय हुआ जब राज्य के 6 किलों को वर्ड हैरिटेज सूची में शामिल किया गया । जो निम्न है -

1. चित्तौडगढ
2. रणथम्भौर
3. आमेर
4. जैसलमेर
5. कुम्भलगढ
6. गागरौन

जयपुर शहर के परकोटे को भी विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया है ।

राज्य में पर्यटन विकास हेतु कई परिपथ का निर्माण किया गया है । जो निम्न है -

1. जयपुर परिपथ - जयपुर, टोंक, सवाई माधोपुर, रणथम्भौर, अजमेर ।
2. मरू परिपथ - जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, बाडमेर, नागौर ।
3. अलवर परिपथ - अलवर, डीग, भरतपुर, धौलपुर ।
4. हाडौती परिपथ - कोटा, बूंदी, झालावाड, बारां

राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति

आधुनिक राजस्थान का इतिहास

1857 की क्रान्ति

- 1832 में राजस्थान में पहली बार A.G.G. (Agent to governer general) बना ।
- इसका 'मुख्यालय अजमेर' था ।
- ''लॉकेट'' राजस्थान का पहला ए.जी.जी था ।
- 1845 में आबू को मुख्यालय बनाया गया ।
- 1857 की क्रान्ति के समय ''जॉर्ज पेट्रिक लॉरेन्ज'' राजस्थान का ए.जी.जी था ।
- यह ए.जी.जी बनने से पहले मेवाड का पी.ए. **(political Agent)** था ।

1857 क्रान्ति के समय राजस्थान में अंग्रेजो की राजस्थान में 6 छावनी थी ।

1. नसीराबाद (अजमेर) भारत का अधिकारी जी.जी. Governe general
2. नीमच (एम.पी) राज्य का अधिकारी ए.जी.जी. (Assistant to G.G.)
3. देवली (टोंक) रियासत का अधिकारी (Political Agent)
4. एरिनपुरा (पाली)
5. ब्यावर (अजमेर)
6. खैरवाडा (उदयपुर)

''ब्यावर'' व ''खैरवाडा'' सैनिक छावनियों में क्रांति नहीं हुई थी ।

नसीराबाद

- ''28 मई'' को ''15वी नेटिव इन्फेन्ट्री'' पे क्रान्ति कर दी ।(पैदल सेना)
- 30वी नेटिव इन्फेन्ट्री भी इनके साथ जुड गई ।
- इन्होने के.पैनी, न्युबरी, स्पोटिसवुड नामक अंग्रेज अधिकारियों को मार दिया तथा यहाँ से विद्रोही दिल्ली चले गये थे ।
- 18 जून 1857 को नसीराबाद के विद्रोही सैनिक दिल्ली पहुँचे व दिल्ली पर कब्जा किया ।

नीमच

- ''मोहम्मद अली बेग'' नामक सैनिक ने कर्नल एबोट के सामने वफादारी की प्रतिज्ञा करने से मना कर दिया था ।
  - 1857 की क्रान्ति में सर्वाधिक सैनिक अवध के थे।
- नीमच की छावनी एकमात्र छावनी थी जो राजस्थान से बाहर थी ।
- नीमज की क्रांति का दमन करने के लिए मेवाड पॉलिटिकल एजेन्ट (P.A.) सावर्स का साथ देने के लिए कोटा का P.A. बर्टन था ।
- ''3 जून को'' ''हीरालाल व मोहम्मद अली नाम के सैनिक के नेतृत्व'' में क्रान्ति हो गई ।
- नीमच छावनी से भागे 40 अंग्रेजो ने डूँगला गाँव (चित्तौड) में रूघाराम नामक किसान के पास शरण ली ।
- मेवाड का Political Agent (PA) ''शॉवर्स'' इन अंग्रेजो को उदयपुर पहुँचाता है जहाँ मेवाड के महाराणा ''स्वरूप सिंह'' ने इन्हें जगमन्दिर महलो में रखा था ।
- ''शाहपुरा (भीलवाडा)'' के राजा ने नीमच के विद्रोहीयों की मदद की थी ।
- निम्बाहेडा (तब टोंक, अभी चित्तौड) में विद्रोहियों का स्वागत किया गया । देवली छावनी के सैनिक भी इनसे आकर मिल गये तथा सारे विद्रोही दिल्ली चले गये ।

एरिनपुरा

- 1835 में ''जोधपुर लीजियन'' का गठन किया गया जिसका मुख्यालय एरिनपुरा था ।
- सीतल प्रसाद, मोती खाँ, तिलकराम आदि के नेतृत्व में आन्दोलन हुआ ।
- शिवनाथ के नेतृत्व में "चलो दिल्ली मारो फिरंगी" का नारा दिया ।
- ''पूर्विया सैनिको की टुकडी'' (यू.पी से) ने 21 अगस्त को आबू में क्रान्ति कर दी । यहाँ से एरिनपुरा आकर अपने बाकी साथियों को लेकर दिल्ली की तरफ बढ गये ।
- ''खैरवा'' नामक गाँव में आउवा का सामन्त ''कुशालसिंह चाम्पावत'' इनसे मिला तथा इन्हे अपना नेतृत्व प्रदान किया ।

1. बिठौडा (पाली) का युद्ध 8 सितम्बर 1857

कुशलराज सिंघवी + हीथकोट **v/s** कुशाल सिंह चाम्पावत

कुशालसिंह जीत गया ।
इस युद्ध में जोधपुर का किलेदार ओनाड सिंह पंवार मारा गया था ।

2. चैलावास का युद्ध 18 सितम्बर 1857 (काले-गोरी का युद्ध)

जार्ज पैट्रिक लोरेन्स + मैकमोशन वर्सेज कुशालसिंह चम्पावत
↓ ↓
ए.जी.जी. पी.ए.

Toppersnotes Unleash the topper in you

- इसे "काले-गोरी का युद्ध" कहा जाता है ।
  इस युद्ध में भी कुशालसिंह जीत गया तथा "मैकमोशन" (जोधपुर का पॉलटिकल एजेन्ट)को मार दिया गया ।

1. आउवा का युद्ध 20 जनवरी 1858

- कर्नल होम्स तथा हंसराज जोशी ने आउवा पर आक्रमण किया । कुशालसिंह अपने छोटे भाई पृथ्वी सिंह (लाम्बिया गाँव का ठाकुर) को छोडकर मेवाड में सहायता के लिए चला गया ।
- होम्स ने आउवा पर अधिकार कर लिया तथा "सुगाली माता" की मूर्ति उठा कर ले गया ।
- इसे राजस्थान में क्रान्तिकारियों की देवी कहा जाता है ।
- मेवाड में सलूम्बर के "केसरीसिंह" तथा कोठारिया (राजसमन्द) के जोधसिंह ने कुशालसिंह को शरण दी ।
- 1860 में कुशालसिंह ने नीमच में अंग्रेजो के सामने आत्मसमर्पण कर दिया ।
- कुशालसिंह की जाँच के लिए अंग्रेजो ने "टेलर कमीशन" बनाया ।
- कुशालसिंह का साथ देने वाले अन्य सामन्तः

गुलर ⟶ बिशन सिंह

आलणियावास ⟶ अजीत सिंह

- आसोप (जोधपुर) - शिवनाथ सिंह

- शिवनाथ सिंह ने दिल्ली जाने का प्रयास किया था लेकिन नारनौल (हरियाणा) के पास गेरार्ड से (अंग्रेजी सेनापति) हार जाता है ।

सुगाली माता

यह 10 सिर, 54 हाथों वाली काले संगमरमर की मूर्ति है । जिसे अंग्रेजो (होम्स) ने अजमेर के "राजपूताना म्यूजियम" में रखा था । कालान्तर में पाली के "बांगड म्यूजियम" में रख दिया गया ।

नोटः राजस्थान धरोहर संरक्षण एवं प्रोन्नति प्राधिकरण ने घोषणा (2014 में) की थी कि इस मूर्ति कों "आउवा गाँव" में स्थापित किया जायेगा ।

सुगाली माता को 1857 की क्रांति की कुल देवी कहते है ।

कोटा में जन विद्रोह

- 15 अक्टूबर 1857 को "लाला जयदयाल" व "मेहराब खाँ" के नेतृत्व में क्रान्ति हुई ।
- "राजा रामसिंह - द्वितीय" को नजरबंद कर दिया गया ।
- पी.ए बर्टन को मार दिया गया । (इसकी लाश पूरे कोटा में घुमाई)
- रामसिंह - द्वितीय से बर्टन की हत्या की जिम्मेदार वाले एक पत्र पर जबरदस्ती हस्ताक्षर करवायें ।
- करौली के "राजा मदनपाल" ने कोटा के राजा रामसिंह द्वितीय को मुक्त करवाया लेकिन अभी भी कोटा के प्रशासन पर विद्रोहियों का कब्जा था ।
- मार्च 1858 में "रॉबर्टस" (अंग्रेज अफसर) कोटा को विद्रोहियों से मुक्त करवाता है ।
- "जयदयाल" व "मेहराब खाँ" को मृत्युदण्ड दिया गया । रामसिंह - द्वितीय को तोपो की सलामी घटाकर 17 से 13 कर दी गई व मदनपाल की तोपों की सलामी की संख्या 13 के स्थान पर 17 कर दी । (अंग्रेज, बर्टन की हत्या को रोकने के प्रयास नहीं करने से नाराज)
- मथुराधीश मंदिर के महंत कन्हैयालाल गोस्वामी ने राजा व पिंडारियों के बीच समझौता करवाया ।

टोंक में विद्रोह

- नवाब वजीरूद्दौला अंग्रेजो का समर्थक था उसके मामा मीर आलम ने विद्रोहियों का साथ दिया ।
- निम्बाहेडा (टोंक में) ताराचन्द पटेल ने कर्नल जैक्सन की सेना का सामना किया था ।
- (क्योंकि कर्नल जैक्सन नीचम के विद्रोहियों का पीछा कर रहा था)
- टोंक के विद्रोह में "महिलाओं" ने भी भाग लिया था । इसकी पुष्टि मुहम्मद मुजीब के नाटक "आजमाईश" से होती है ।

धौलपुर में विद्रोह

- "राव रामचन्द्र" तथा "हीरालाल" के नेतृत्व में क्रान्ति हुई ।
- राजा भगवन्त सिंह ने क्रान्ति दबाने के लिए पटियाला से सेना बुलाई ।
- यहां ग्वालियर से आये हुए विद्रोहियों ने विद्रोह करवाया था ।

भरतपुर में विद्रोह

- यहाँ "गुर्जर" व "मेव जाति" ने अंग्रेजो के खिलाफ क्रान्ति कर दी ।
- राजा जसवन्त सिंह ने पी.ए. मौरीसन को भरतपुर छोडने की सलाह दी थी ।

अलवर में विद्रोह

- राजा बन्ने सिंह ने अंग्रेजो का साथ दिया तथा दीवान फैजाल खाँ ने विद्रोहियों का साथ दिया

जयपुर में विद्रोह

विद्रोही :

- सादुल्ला खाँ
- उस्मान खाँ
- विलायत खाँ

पी.ए ईडन के कहने पर राजा रामसिंह द्वितीय ने विद्रोहियों को गिरफ्तार कर लिया ।

अमरचंद बांठिया

- ये मूल रूप से बीकानेर के रहने वाले थे ।
- क्रान्ति के समय ग्वालियर में झाँसी की रानी की वित्तीय सहायता की थी ।
- इस कारण अंग्रेजो ने इसे फाँसी दे दी थी ।
- ये 1857 की क्रान्ति में "राजस्थान के सबसे कम उम्र के शहीद" थे ।
- इन्हें "1857 की क्रान्ति का भामाशाह" कहा जाता है ।

सरदार सिंह

- क्रान्ति के समय बीकानेर का राजा था ।
- एकमात्र राजा जो अंग्रेजो की सहायता के लिए रियासत से बाहर गया था ।
- हिसार के पास बाडलू नामक ग्राम में लडा ।
- अंग्रेजो ने इसे "टिब्बी परगने" (हनुमानगढ) के "41 गाँव" दिये थें ।

तांत्या टोपे

- तात्या टोपे राजस्थान में 2 बार सहायता लेने के लिए आया था ।
- यह सबसे पहले भीलवाडा के माँडलगढ में आया था ।
- बांदा का नवाब रहीम अली खान ने तात्या टोपे का साथ दिया ।
- बनास नदी के किनारे हुए "कुआडा के युद्ध" में सरबर्टस से हार गया था ।
- झालावाड के राजा पृथ्वीसिंह ने पलायता नामक स्थान पर तांत्या टोपे के खिलाफ सेना भेजी । सेना की "गोपाल पलटन" को छोडकर बाकी सेना ने लडने से मना कर दिया । तांत्या टोपे झालावाड पर अधिकार कर लेता है । पृथ्वीसिंह को तांत्या टोपे को 5 लाख रूपयें देने पडे ।
- तांत्या टोपे ने बांसवाडा पर भी अधिकार कर लिया था । सलूम्बर के केसरी सिंह तथा कोठारियाँ के जोध सिंह ने तांत्या टोपे को सहायता दी थी ।
- बीकानेर के सरदार सिंह ने तांत्या टोपे को 10 घुडसवार की सहायता दी थी ।
- तात्यां टोपे "डूँगलमेर को छोडकर" बाकी सभी रियासतो (राजस्थान की) में सहायता के लिए गया था ।
- सीकर के सामन्त को तांत्या टोपे की शरण देने के आरोप में फाँसी दी गई सीकर में तांत्या टोपे की छतरी है ।
- तांत्या के पुराने सहयोगी नरवर के मानसिंह था, मानसिंह ने विश्वासघात करते हुए 7 अप्रैल, 1859 को उसे अंग्रेजों को सुपुर्द कर दिया। अतः इसे अंग्रेजों द्वारा फाँसी दे दी गई ।

राजस्थान में किसान एवं जनजाति आन्दोलन

1. बिजौलिया किसान आन्दोलन : (गिरधारीपुरा से धाकड किसानों द्वारा शुरू) (1897)

- राणा सांगा ने अशोक परमार को "उपरमाल की जागीर" दी थी । जिसका मुख्यालय बिजौलिया था । यह मेवाड रियासत के 16 प्रथम श्रेणी ठिकानों में से एक था ।
- बिजौलिया का पुराना नाम - विजयावली
- उपरमाल का पुराना नाम - उत्तमाद्रि
- उपरमाल नाम विन्ध्याचल के ऊँचे पठार पर बसा होने के कारण ।
- बिजौलिया वर्तमान भीलवाडा जिले में स्थित है ।

कारण :

- 84 प्रकार के टैक्स लगाना
- अधिक भू-राजस्व
- लाटा - कूता व्यवस्था (अन्दाजे से फसल तौलना)
- चंवरी कर (कृष्ण सिंह ने लडकियों की शादी पर लगाया था ।)
- तलवार बंधाई (वैसे यह सामन्त द्वारा राजा को दिया जाता था ।)
- (1906 में बिजौलिया के पृथ्वीसिंह ने जनता पर लगाया था ।)
- यह आन्दोलन 3 चरणों में हुआ था ।

1. प्रथम चरण : 1897–1914 (17 साल)

''गिरधारीपुरा'' नामक गाँव से ''धाकड किसानों'' द्वारा आन्दोलन शुरू किया गया । ''साधुसीताराम दास'' के कहने पर नानजी पटेल व ठाकुरी पटेल, मेवाड महाराणा (फतेह सिंह) के पास मिलने के लिए गये तथा महाराणा ने हामिद नाम के अधिकारी को जाँच के लिए भेजा । प्रथम चरण में आन्दोलन में सफलता नही मिली तथा प्रारम्भ में ''स्वतः स्फूर्त ढंग'' से आन्दोलन चलता रहा स्थानीय नेता :

- प्रेमचन्द भील
- ब्रह्मदेव
- फतहकरण चारण

2. द्वितीय चरणः (1915–23) (9 साल)

- सन् 1916 में साधु सीताराम दास के कहने पर विजय सिंह पथिक ने बिजोलिया किसान आन्दोलन का नेतृत्व किया ।
- ''विजयसिंह पथिक'' व ''माणिक्य लाल वर्मा'' आन्दोलन के साथ जुडे विजयसिंह पथिक ने ''1917'' में ''ऊपरमाल मंच बोर्ड'' की स्थापना की तथा ''मन्ना पटेल'' को अध्यक्ष बनाया ।
- विजय सिंह का बचपन का नाम 'भूपसिंह' था ।
- मेवाड रियासत ने ''1919'' में ''बिन्दुलाल भट्टाचार्य आयोग'' की स्थापना की ।
- वर्ष 1919 में वर्धा में 'राजस्थान सेवा संघ' का गठन हुआ ।
- 1920 में राजस्थान सेवा संघ को अजमेर स्थानांतरण कर दिया ।
- ए.जी.जी. हॉलैण्ड व पी.ए. विलकिन्स के प्रयासो से किसानो के साथ समझौता हुआ तथा उनके 84 में से 35 कर माफ कर दिये गये ।
- बिजोलिया के सामन्त ने इस समझौते को मानने से मना कर दिया था ।
- विजयसिंह पथिक ने ऊपरमाल सेवा समिति गठित की व 'ऊपरमाल का डंका' नाम से पत्र प्रकाशित किया ।
- विजय सिंह पथिक ने कानपुर से प्रकाशित होने वाले अखबार 'प्रताप' (गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा) के सहयोग से इस आन्दोलन को पूरे देश में चर्चित कर दिया ।
- सन् 1920 में पथिक ने रामनारायण चौधरी के साथ मिलकर 'राजस्थान केसरी' नामक समाचार पत्र निकाला ।

3. तृतीय चरणः (1923–41) 18 साल

- किसानों ने विजयसिंह पथिक के कहने पर अपनी जमीनें सामन्त को लौटा दी । (तथा सामन्तो ने यह जमीन वापस किसानों को नही दी)
- 1927 में विजयसिंह पथिक आन्दोलन से अलग हो गये ।
- गाँधीजी ने जमनालाल बजाज को आन्दोलन के नेतृत्व के लिए भेजा । जमनालाल बजाज ने यहाँ ''हरिभाऊ उपाध्याय'' को आन्दोलन के लिए नियुक्त किया ।
- 1941 में मेवाड के प्रधानमंत्री ''वी. राघवाचारी'' तथा राजस्व मंत्री ''मोहन सिंह मेहता'' ने किसानों के साथ समझौता करवाया तथा किसानों की जब्त जमीने वापस दे दी गई व उनके ''कर'' कम कर दिये थे ।
- तिलक ने अपने 'मराठा' समाचार पत्र में प्रथम चरण बिजौलिया किसान आन्दोलन के पक्ष में लेख लिखा था तथा तिलक ने मेवाड महाराणा फतेहसिंह को पत्र भी लिखा ।
- विजयसिंह पथिक ने गणेश शंकर विद्यार्थी को चाँदी की राखी भेजी थी ।
- प्रेमचन्द का रंगभूमि उपन्यास बिजौलिया किसान आन्दोलन पर आधारित है ।
- माणिक्य लाल वर्मा 'पंछीडा' गीत के माध्यम से किसानों को उत्साहित करते थे ।
- भंवरलाल जी ने भी अपने गीतों से किसानों को उत्साहित किया था ।
- बिजौलिया किसान आन्दोलन ने स्वयं को मेवाड से पृथक रखा था ।
- बिजौलिया किसान आन्दोलन में 'तुलसी भील' ने संदेश वाहक कार्य किया था ।

2. बेंगू किसान आन्दोलन

- बेंगू मेवाड रियासत का प्रथम श्रेणी ठिकाना था ।
- वर्तमान चित्तौडगढ जिले में स्थित है ।
- यहाँ पर भी धाकड किसानों द्वारा आन्दोलन किया गया ।
- 1921 में ''भेनाल (भीलवाडा)'' नामक स्थान से यह आन्दोलन शुरू हुआ ।

कारण :

1. अधिक भू-राजस्व
2. बेगार प्रथा

- बेंगू के सामन्त अनूपसिंह ने किसानों से समझौता कर लिया लेकिन मेवाड रियासत ने इसे मानने से मना कर दिया तथा इसे ''बोल्शेविक समझौता'' कहा । (ट्रेंच ने कहा)

12. किशनगढ प्रजामण्डल (1939)

संस्थापक : "कांतिलाल चौथाणी" तथा "जमाल शाह" राज्य की ओर से प्रजामण्डल की गतिविधियों का विरोध नहीं किया गया ।

13. सिरोही प्रजामण्डल

संस्थापक

(1) वृद्धि शंकर त्रिवेदी

(2) बॉम्बे में "गोकुल भाई भट्ट" ने स्थापना की (राजस्थान का गांधी)

14. कुशलगढ प्रजामण्डल (अप्रैल 1942)

संस्थापक : भँवरलाल निगम

15. बांसवाडा प्रजामण्डल : (1943)

- भूपेन्द्र नाथ त्रिवेदी
- मणिशंकर नागर
- धूलजी भाई भावसार
- "भूपेन्द्र नाथ त्रिवेदी" बॉम्बे से "संग्राम" नामक समाचार पत्र निकालते थे ।
- "विजय बहिन भावसार" (धूलजी भाई की पत्नी) ने "महिला मण्डल" की स्थापना की ।

16. डूंगरपुर प्रजामण्डल

स्थापना : 1 अगस्त 1944

संस्थापक :

1. भोगीलाल पाण्ड्या - वागड का गाँधी
2. गौरी शंकर उपाध्याय का समाचार पत्र "सेवक"

रास्तापाल घटना - 19 जून, 1947

- अध्यापक "नानाभाई" व "भील बालिका कालीबाई" शहीद हो गये थे । डूंगरपुर में गेपसागर तालाब के पास इन दोनों की मूर्ति है ।
- बालिका शिक्षा के क्षेत्र में "कालीबाई पुरस्कार" दिया जाता है ।
- एक अन्य अध्यापक "सेगा भाई" (नानाभाई के भाई) घायल हो गये थे ।

पूनावाडा काण्ड

स्कूल बन्द करवाने गये रियासत के सैनिकों से अध्यापक "शिवराम भील" की पिटाई कर दी थी ।

प्रयाग सभा : डूँगरपुर प्रजामण्डल ने आयोजन किया था (जागरूकता के लिए)

17. डूँगरलमेर प्रजामण्डल

- स्थापना : "मीठालाल व्यास" ने जोधपुर में "सागरमल गोपा"
- रघुनाथ सिंह ने माहेश्वरी नवयुवक मण्डल की स्थापना की ।

18. प्रतापगढ प्रजामण्डल (1945)

- अमृतलाल पायक
- चुन्नी लाल प्रभाकर
- ठक्कर बापा

19. झालावाड प्रजामण्डल (25 नवम्बर 1946)

- संस्थापक : मांगीलाल भव्य
- "राजा हरीशचन्द्र" के नेतृत्व में "उत्तरदायी सरकार" की स्थापना की ।

राजस्थान का एकीकरण

- 18 जुलाई 1947 को "भारतीय स्वतन्त्रता अधिनियम" पारित हुआ "धारा-8" के तहत अंग्रेजो की देशी रियासतों के साथ संधिया समाप्त कर दी गई ।
- (यह प्लान 3 जून को आ गया था लेकिन 18 जुलाई को संसद में पास हुआ)
- "5 जुलाई 1947" को "रियासती विभाग" की स्थापना की गई । जिसके "अध्यक्ष वल्लभ भाई पटेल" व "सचिव वी.पी. मेनन" थे ।
- इस विभाग ने घोषणा कि "10 लाख से अधिक" जनसंख्या तथा "1 करोड आय" वाली रियासतें आजाद रह सकती है ।
- इस समय राजस्थान में ऐसी केवल 4 रियासतें थी ।
  1. मेवाड
  2. मारवाड
  3. जयपुर
  4. बीकानेर
- आजादी के समय राजस्थान में "19 रियासते 3 ठिकाने व 1 केन्द्र शासित प्रदेश" था ।

  3 ठिकाने
  1. लावा (टोंक से अलग)
  2. नीमराणा (अलवर से अलग)
  3. कुशलगढ (बांसवाडा से अलग किया)

  1 केन्द्र शासित प्रदेश - अजमेर - मेरवाडा
- इन सभी को मिलाकर 7 चरणों में राजस्थान का एकीकरण हुआ था ।

- राजस्थान के एकीकरण का सबसे पहले प्रयास "गवर्नर जनरल लिननिथगों" ने किया था ।
- मेवाड महाराणा "भूपाल सिंह" ने राजस्थान, मालवा व सौराष्ट्र की रियासतों को मिलाकर "राजस्थान यूनियन" बनाने का प्रयास किया तथा इसके लिए 25 जून – 26 जून 1946 को "उदयपुर" में सम्मेलन किया ।
- बीकानेर महाराजा शार्दुल सिंह (गंगासिंह का बेटा) ने सबसे पहले 7 अगस्त 1947 संविधान सभा में शामिल होने की घोषणा की थी ।

प्रथम चरण :18 मार्च 1948

मत्स्य संघ : नामकरण "के. एम. मुँशी'
पी.एम. :– "शोभाराम कुमावत"

धौलपुर	करौली	अलवर	भरतपुर	नीमराणा ठिकाना
↓	↓	↓	↓	
उदयभानसिंह (राजप्रमुख)	गणेशपाल (उप राजप्रमुख)	राजधानी	उद्घाटन (18 मार्च 1948)	

राजप्रमुख : उदयभानसिंह

- प्रधानमंत्री : शोभाराम कुमावत (अलवर)
- उपप्रधानमंत्री – डुंगल किशोर चतुर्वेदी
- मुख्य अतिथि – एन वी गाडगील
- "अलवर" व "भरतपुर" रियासत का नियंत्रण भारत सरकार ने अपने पास पहले ही ले लिया था । (क्योंकि अलवर का राजा गांधीजी की हत्या में दिल्ली में नजरबंद था तथा भरतपुर का राजा छोटा था उस में)

दूसरा चरण: राजस्थान संघ/पूर्व राजस्थान

पी.एम. : गोकुल लाल असावा (25 मार्च 1948)
(9 रियासत और 1 ठिकाना)

1. कोटा – भीमसिंह – राजप्रमुख राजधानी + उद्घाटन 25 मार्च 1948
   एन.वी. गाडविल
2. बून्दी – बहादुर सिंह – वरिष्ट उपराज प्रमुख
3. झालावाड
4. डूंगरपुर – लक्ष्मण सिंह कनिष्ठ उपराजप्रमुख
5. बाँसवाडा
6. प्रतापगढ
7. कुशलगढ (ठिकाना)
8. टोंक
9. किशनगढ
10. शाहपुरा

- "टोंक" राजस्थान की "एकमात्र मुस्लिम रियासत" थी ।
- "किशनगढ" व "शाहपुरा" रियासतों को तोपो की सलामी नहीं दी जाती थी (छोटी होने के कारण)
- शाहपुरा व किशनगढ रियासतों ने अजमेर मेरवाडा से मिलने से मना कर दिया ।
- "बांसवाडा" के महरावल "चन्द्रवीर सिंह" ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर करते हुये कहा था कि–
  "मैं अपने डैथ वारन्ट पर हस्ताक्षर कर रहा हूँ ।"

तीसरा चरण : संयुक्त राजस्थान (राजस्थान संघ + मेवाड)

- पी.एम : माणिक्य लाल वर्मा 18 अप्रैल, 1948 (उदयपुर)
- राजप्रमुख : "भूपालसिंह (मेवाड)"
- वरिष्ठ उपराजप्रमुख : भीमसिंह (कोटा)
- कनिष्ठ उपराजप्रमुख : बहादुर सिंह (बून्दी)
  लक्ष्मणसिंह (डूँगरपुर)
- राजधानी : उदयपुर
- उद्घाटन : उदयपुर (जवाहर लाल नेहरू) 18 अप्रैल 1948
- प्रधानमंत्री : माणिक्य लाल वर्मा
- उपप्रधानमंत्री : गोकुल लाल असावा
- विधानसभा का एक अधिवेशन प्रतिवर्ष कोटा में होगा तथा कोटा के विकास के लिए विशेष प्रयास किये जायेंगे ।
- "भूपाल सिंह" को 20 लाख प्रीवी पर्स दिया गया
- औपचारिक प्रीवी पर्स 10 लाख :– राजप्रमुख के वेतन के धार्मिक अनुदान के रूप में 5 लाख रूप में 5 लाख प्रीवी पर्स: राजाओं को दी जाने वाली पेंशन (विलय के बाद)

चौथा चरण : वृहत् राजस्थान (30 मार्च, 1949)

प्रधानमंत्री :–हीरालाल शास्त्री (जयपुर)

राम मनोहर लोहिया ने राजस्थान आन्दोलन समिति का गठन किया । तथा मांग की शेष बची रियासतों का जल्द से जल्द राजस्थान में विलय किया जायें ।

- संयुक्त राजस्थान + जयपुर + जोधपुर + बीकानेर + जैसलमेर = वृहत् राजस्थान
- "30 मार्च 1949" में "वल्लभ भाई पटेल" ने जयपुर में उद्घाटन किया ।

- इसलिए 30 मार्च को राजस्थान दिवस मनाया जाता है ।

महाराजप्रमुखः	–	"भूपाल सिंह" (मेवाड)
राजप्रमुखः	–	सवाई मानसिंह द्वितीय (जयपुर)
वरिष्ठ उपराजप्रमुखः	–	हनवन्त सिंह (जोधपुर) भीमसिंह (कोटा)
कनिष्ठ उपराजप्रमुख	–	बहादुर सिंह (बूंदी) लक्ष्मणसिंह (डूँगरपुर)

प्रीवी पर्सः
जयपुर – 18 लाख
जोधपुर – 17.50 लाख

- राजधानी के लिए जयपुर व जोधपुर 2 विकल्प थे अतः इसके समाधान के लिए वल्लभ भाई पटेल ने एक समिति बनाई तथा इस समिति ने जयपुर को राजधानी बनाने की सिफारिश की ।

समिति के सदस्य

- वी.आर.पटेल
- एच.सी.पूरी (लेट कर्नल)
- एच.पी. सिन्ह
- हाइकोर्ट : जोधपुर
- शिक्षा विभाग : बीकानेर
- खनिज विभाग : उदयपुर
- वन और सहकारी विभाग : कोटा
- कृषि विभाग : भरतपुर
- "लावा" ठिकाने को "19 जुलाई 1948" को जयपुर में शामिल किया गया था ।

पाँचवा चरण : संयुक्त वृहत् राजस्थान

"शंकर राव देव समिति" की सिफारिशों के आधार पर 15 मई 1949 को "मत्स्य संघ" का वृहत् राजस्थान में विलय कर दिया गया ।
प्रधानमंत्री – हीरालाल शास्त्री
राजप्रमुख – सवाई मानसिंह (जयपुर)

समिति के अन्य सदस्य

- आर.के सिद्धवा,
- प्रभुदयाल
- शोभाराम कुमावत को शास्त्री मंत्रीमण्डल में शामिल कर लिया गया ।

छठा चरण (राजस्थान संघ)

- आबू व देलवाडा सहित 89 गाँव गुजरात में मिलाये गए तथा शेष सिरोही राजस्थान में मिला दिया गया इसमें गोकुल भाई भट्ट का गाँव हाथल भी शामिल था ।
- यह विलय – 26 जनवरी 1950 को किया गया तथा हमारे प्रदेश का नाम राजस्थान कर दिया ।
- इस अनुचित विलय पर पटेल का जवाब था "राजस्थान वालों को गोकुल भाई भट्ट चाहिए था वो हमने दे दिया ।"
- हीरालाल शास्त्री को राजस्थान का प्रथम मनोनित मुख्यमंत्री बनाया गया ।
  मनोनित मुख्यमंत्री – हीरालाल शास्त्री जायनारायण व्यास सी.एस. वेंकटाचारी (आई.सी.एस)

निर्वाचित मुख्यमंत्री

1. टीकाराम पालीवाल प्रथम – बाद में उपमुख्यमंत्री बनें ।
2. जायनारायण व्यास
3. मोहन लाल सुखाडिया – राजस्थान के सबसे युवा सी.एम, राजस्थान के सर्वाधिक समय रहने वाले सी. एम.
4. सबसे कम समय तक रहने वाले मुख्यमंत्री – हीरालाल देवपुरा (16 दिन बाद में मंत्री बनाया गया)
5. पहले चुनाव (1951-52) में कांग्रेस के बाद सर्वाधिक सीटें रामराज्य परिषद को मिली थी ।

सातवाँ चरण : (वर्तमान राजस्थान)
(1 नवम्बर, 1956)

फजल अली की अध्यक्षता में राज्य पुनर्गठन आयोग बनाया गया ।
इसमें 3 सदस्य थें ।

- फजल अली
- हृदय नाथ कुंजः
- के.एम. पणिक्कर (बीकानेर से संविधान सभा में भेजे गये थे ।)

इस आयोग की सिफारिशों के आधार पर

1. आबू, देलवाडा का राजस्थान में विलय किया गया ।
2. अजमेर – मेरवाडा का राजस्थान में विलय किया गया ।
3. एम.पी. का सुनेल टप्पा राजस्थान में मिलाया गया ।
4. राजस्थान का सिरोज एम.पी को दिया गया था ।

सिन्धियों के त्यौहार

चेटीचण्ड/झूलेलाल जयन्ती (झूलेलाल को वरूण का अवतार मना जाता है)	चैत्र शुक्ल
थदडी सातमः	भाद्रपद कृष्ण सप्तमी

ईसाईयों के त्यौहार

गुड फ्राइडे : इस दिन ईसा मसीह को फांसी पर चढाया गया था ।

गुड फ्राइडे :- ईस्टर से ठीक पहला फ्राइडे होता है ।

ईस्टर : इस दिन ईसा मसीह पुर्नजीवित हुये थे । यह रविवार का दिन था । 2 मार्च से 22 अप्रैल के बीच जो पूर्णिमा आती है उसके ठीक बाद वाला रविवार, ईस्टर होता है ।

असंन्शन डे : ईस्टर के 40 दिन बाद आता है । इस दिन ईसा मसीह वापस स्वर्गलोक चले गये थें ।

राजस्थान के लोक देवता

पाबू हडबू रामदे, मांगलिया मेहा ।
पाँचू पीर पधारज्यों, गोगाजी जेहा ॥
पाबू हडबू रामदेवजी, मेहाजी, गोगाजी : ये 5 पीर हैं । जिन्हे हिन्दु व मुसलमानों दोनों मानते हैं ।

1. पाबूजीः (पाबूजी राठौड)

जन्म स्थान : 1239 ई. कोलूमण्ड (जोधपुर)
पिता : धाँधल
माता : कमला दे
पत्नी : फूलमदे/सुप्यार दे (अमरकोट की राजकुमारी)
पाबूजी की घोडी : ''केसर कालमी'
मंदिर : कोलूमंड (जोधपुर)
प्रमुख वाद्ययंत्र : रावणहत्था
उपनाम : गौ रक्षा देवता, ऊँटो के देवता, प्लेग रक्षक देवता, लक्ष्मण के अवतार, वचन पुरुष देवता, अछुतोद्धारक देवता

- पाबूजी को ''लक्ष्मण जी का अवतार'' माना जाता है ।
- पाबूजी के मेले मे 'थाली' नृत्य किया जाता है ।
- पाबूजी प्लैग रक्षक एवं ऊंटो के देवता है ।
- राजस्थान में सर्वप्रथम ऊंट लाने का श्रेय पाबूजी को दिया जाता है ।
- देवल नामक चारण महिला की गायों की रक्षा के लिए चार फेरे लेकर बीच में उठकर आ गये थे अतः पश्चिमी राजस्थान में आज भी शादी मे चार फेरे लिये जाते है । ''देचू गाँव (जोधपुर)'' में ''जींदराव खींची'' के खिलाफ लडते हुये मारे गये थे ।
- चाँदा व डामा नामक 2 भील भाई इनके सहयोगी
- थें ।
- राईका/रैबारी/देवासी (ऊँट पालने वाली जाति) पाबूजी को अपना प्रमुख देवता मानते हैं ।
- पाबूजी को ''प्लेग रक्षक देवता'' भी कहा जाता है ।
- कोलूमण्ड (जोधपुर) में ''चैत्र अमवस्या'' (होली के 15 दिन बाद) को पाबूजी का मेला
- पाबूजी की फड ''सबसे लोकप्रिय फड है ।'' भील जाति के भोपे इसे रावणहत्था वाद्य यंत्र के साथ गाते है
- पाबूजी बाईं ओर झुकी हुई पाग के लिए प्रसिद्ध है ।
- पाबूजी की पूजा हाथ भाला लिए हुए अश्वारोही के रूप में होती है ।
- थोरी जाति के लोग सारंगी द्वारा पाबूजी का यश गाते है । जिसे ''पाबू धणी री वाचना'' कहते है ।

- पाबूजी ने 7 थोरी (जाति) भाइयों को शरण दी थी ।
- पाबूजी के पवाडे (भजन) रेबारी जाति के लोग (किसी वीर पुरूष की याद में गाये जाने वाले) माट (बडे मटके की तरह का) वाद्य यंत्र के साथ गाये जाते हैं ।
- आशिया मोडजी की पुस्तक – "पाबू प्रकाश"

2. रामदेवजीः (रामदेवजी तँवर)

जन्म स्थान – उण्डू काश्मीर (बाडमेर)
पिता – अजमाल जी
माता – मैणादे
पत्नी – नेतल दे (अमरकोट की राजकुमारी)
गुरू – बालीनाथ जी
मन्दिर – रूणीचा (रामदेवरा) (जैसलमेर), छोटा रामदेवरा (गुजरात), मसूरिया (जोधपुर), बराठिया (अजमेर), सुरताखेडा (चित्तौड), राजस्थान को छोटा रामदेवरा (अजमेर)
उपनाम – पीरों के पीर, रामसापीर, रुणेचा रा धणी, साम्प्रदायिकता के देवता, कृष्ण के अवतार

- रामदेवजी का जन्म विक्रमी संवत 1409 से 1462 के मध्य माना जाता है । उनका जन्म भाद्रपद शुक्ल द्वितीया को हुआ था जिसे "बाबा री बीज" कहते है । इस जम्मा भी कहते है ।
- रामदेवजी को राव मल्लीनाथ ने पोकरण की जागीर दी थी । जो रामदेव जी ने अपनी भतीजी के विवाह मे जगमाल मालावत के पुत्र हमीर को दहेज मे दे दी ।
- विक्रमी संवत 1515 को इन्होने रामसरोवर (रूणीचा) में जीवित समाधि ले ली थी ।
- रामदेवजी के चमत्कारों को "परचा" कहा जाता है । इन्होने मक्का के पांच पीरों को परचा दिया था । अतः मुस्लिम समाज में "रामसापीर" कहलाये ।
- हरजी भाटी इनके प्रमुख सहयोगी थे ।
- डालीबाई इनकी अनन्य मेघवाल भक्त थी । जिसने रामदेवजी से एक दिन पूर्व रूणीचा में सामाधि दी ।
- रामदेव जी एक मात्र लोक देवता है । जो कवि थे । रामदेव जी पुस्तक – "चौबीस बाणियाँ" है ।
- रामदेवजी ने "कामडिया पंथ" की शुरूआत की थी ।
- कामडिया पंथ की महिलाओं द्वारा "तेरहताली नृत्य" किया जाता है ।
- "भाद्रपद शुक्ल एकादशी" को रामदेव जी ने जीवित समाधि ली थी ।
- भाद्रपद शुक्ल द्वितीया से लेकर एकादशी तक विशाल मेला भरता है ।
- रामदेवजी के मन्दिर में "पगल्या" पूजे जाते हैं ।
- नेजा – रामदेवजी का झण्डा (पचरंगा) (नेजा = झण्डा)
- लीलों – रामदेवजी के घोडे का नाम (लीला = घोडा)
- जम्मा – रामदेवजी के जागरण
- रामदेव जी कृष्ण एवं विष्णु के अवतार माने जाते है । ये संप्रदायिक सौहार्द एवं सदभाव के देवता है ।
- रामदेव जी छुआछूत एवं भेदभाव मिटाने वाले देवता माने जाते है ।
- रामदेव जी ने भैरव राक्षस का अंत किया था ।
- रामदेव जी के पुजारी तंवर जाति के राजपूत होते है ।
- "रिखियां" – रामदेवजी के मेघवाल जाति के भक्त को कहा जाता है । ये रिखियां जो भजन गाते है उन्हें "ब्यावले" कहा जाता है ।
- सोने या चांदी के पात्र पर रामदेव जी का चित्र खुदवाकर जो लोग गले मे पहनते है उसे "फूल" कहते है ।

3. गोगाजी : (गोगाजी चौहान)

जन्मस्थान : ददरेवा (चुरू) 1003 विक्रमी संवत ।
पिता का नाम : जेवर
माता का नाम : बाछल
पत्नी : केलमदे (जोधपुर)
सरियल (UP)
उपनाम : गोगापीर, जिन्दापीर, साँपो का देवता, गौरक्षक
गुरु : गोरखनाथ

- यह मुहम्मद गजनवी व गौरखनाथ के समकालीन थे ।
- उनका अपने मौसेरे भाई अर्जन – सर्जन के साथ सम्पति का विवाद चल रहा था ।
- अर्जन – सर्जन मुस्लिम सेना लेकर आये और गोगाजी की गायों को घेर लिया अतः – अपने मौसेरे भाईयों अर्जन–सर्जन के खिलाफ गायों की रक्षा करते हुये मारे गये थे ।
- गोगाजी ने महमूद गजनवी के साथ युद्ध किया था तथा गजनवी ने इन्हें "जाहिर पीर" (साक्षात देवता) कहा था ।
- ददरेवा के मन्दिर को "शीर्ष मेडी" (सिर कट कर गिरा था) (चुरू) तथा
- गोगामेडी (हनुमानगढ) के मन्दिर को "धुर मेडी" (धड कट कर गिरा था)
- गोगामेडी (हनुमानगढ) में 11 महीने पूजा चामल जाति के मुस्लिम तथा 1 माह हिन्दू व मुसलमान दोनों मिलकर पूजा करते हैं ।
- "सर्प रक्षक देवता" के रूप में पूजे जाते हैं ।

- गोगाजी के मन्दिर खेजडी के नीचे बनाये जाते हैं । (गोगाजी के मन्दिर को मेडी कहते हैं ।)
- भाद्रपद कृष्ण नवमी को गोगाजी का विशाल मेला लगता है ।
- गोगाजी की सवारी नीली घोडी है । जिसे ''गोगा बापा'' कहा जाता है ।
- हिन्दू ''नागराज'' एवं मुस्लिम ''गोगा पीर'' की पूजा रूप मे पूजा करते है । गोगाजी की पूजा भाला लिए हुए योद्धा के रूप में की जाती है ।
- गोगा जी के मंदिर खेजडी वृक्ष के नीचे होते है ।
- गोगामेडी का मन्दिर ''मकबरा शैली'' में बना हुआ है ।
- मन्दिर में ''बिस्मिल्लाह लिखा'' हुआ है ।
- खिलेरियों की ढाणी (सांचौर, जालौर) में गोगाजी की ओल्डी (छोटा मन्दिर) बनी हुई है ।

4. हडबूजी सांखला

पिता – मेहा जी सांखला
जन्म – भूडेल, नागौर
गुरू – बालकनाथ
मेला – भाद्रपद शुक्ल पक्ष
उपनाम – बाल ब्रह्मचारी, वीर योद्धा, गौ रक्षक देवता
शकुन शास्त्र के ज्ञाता

- पिता की मृत्यु के बाद भूडेल छोडकर हरभमजाल में आकर रहने लगे ।
- रामदेव जी की प्रेरणा से संत बने ।
- ये रामदेवजी के मौसेरे भाई थे ।
- इन्होंने जोधा को मण्डोर जीतने का आशीर्वाद दिया था तथा उसे एक कटार भेंट की थी । मण्डोर जीतने के बाद जोधा ने इन्हें बेंगटी (जोधपुर) गाँव दिया जहाँ पर ये बूढी तथा विकलांग गायों की सेवा करते थे । बेंगटी (जोधपुर) मे इनका मुख्य मंदिर है । बावनी जागीर भेंट की ।
- जोधपुर महाराजा अजीतसिंह ने यहाँ मन्दिर का निर्माण करवाया । मन्दिर में ''हडबूजी की बैलगाडी की पूजा'' की जाती है ।
- हडबूजी का वाहन – ''सियार''
- हडबूजी ''शकुनशास्त्र (भविष्य वक्ता)'' के ज्ञाता थे ।

5. मेहाजी मांगलिया

- राव चूंडा के समकालीन थे ।
- पालन-पोषण – नैनीहाल मे मांगलिया गोत्र में हुआ था । अतः मांगलिया मेहाजी के नाम से प्रसिद्ध हुए ।
- मुख्य मंदिर : बापीणी (जोधपुर)
- जैसलमेर के ''राणगदेव भाटी'' के खिलाफ युद्ध में मारे गये थे ।
- इनके घोडे का नाम : किरड काबरा
- इनके भोपों के वंश वृद्धि नहीं होती है । ये सन्तान को गोद लेकर वंश आगे बढते है ।
- इनका मेला भाद्रपद कृष्ण जन्माष्टमी को लगता है ।

6. तेजाजी

- जन्म – माघ शुक्ल चतुर्दशी 1073 ई. में
- खरनाल (नागौर) में एक जाट परिवार में जन्म हुआ था ।
- पिता – ताहड जी
- माता – रामकुंवरी
- पत्नी – पेमल दे
- घोडी – लीलण/सिणगारी
- घोडला – पुजारी (यह साँप काटे व्यक्ति का जहर मुँह से चूसकर निकालता है।)
- उपनाम – नागों के देवता, गौरक्षक देवता, धोल्या वीर, काला-बाला के देवता, कृषि उपकारक देवता

तेजाजी के आराध्य स्थल

पनेर (अजमेर) – तेजाजी का पुजारी माली जाति का होता है ।

ब्यावर (अजमेर) – यहाँ तेजा चौक स्थित है ।

भावता (अजमेर) – यहाँ गोमूत्र से साँप काटे व्यक्ति का इलाज होता है ।

- तेजाजी अपनी पत्नी को लाने अपने ससुराल पनेर (अजमेर) जा रहे थें ।
- ''सुरसुरा (अजमेर)'' नामक गाँव में लाछा नामक गुर्जर महिला की गायों को बचाते हुऐ घायल हुये तथा एक साँप के काटने से इनकी मृत्यु हो गई थी । इनके साथ उनकी पत्नि पेमल भी सती हो गई थी ।
- खरनाल मे तेजाजी का मंदिर है जिसे थान कहा जाता है ।
- जोधपुर महाराजा अभयसिंह के समय परबतसर (नागौर) में तेजाजी का मन्दिर बनवाया गया ।
- भाद्रपद शुक्ल दशमी को परबतसर में विशाल पशु मेला लगता है ।
- तेजाजी ''सर्परक्षक देवता'' एवं कुत्ते के काटे हए का ईलाज किया जाता है ।
- इन्हें ''काला-बाला का देवता'' भी कहा जाता है ।
- गोगा जी को धोलिया वीर कहा जाता है ।

- गोगा जी को तलवार धारण किये हुये घोडे पर सवार योद्धा के रूप मे दर्शाया गया है । जिनकी जीभ को सर्प डस रहा है ।
- गोगा जी को डसने वाले नाग का नाम "बासक" था । गोगा जी के भोपा को घोडला कहा जाता है ।
- ऐसी मान्यता है कि सर्प दंशित व्यक्ति के दांये पैर मे तेजाजी की तांत (डोरी) बांध दी जाये तो विष नही चढता ।
- "हल जोतते समय" किसान "तेजाजी का गीत" गाता है ।
- 2010 में तेजाजी पर डाक टिकट जारी किया गया ।
- तेजाजी की बहिन डुंगरी माता का मन्दिर खडनाल (नागौर) में बना हुआ है ।

7. देवनारायण जी

- जन्म स्थान : आसीन्द (भीलवाडा)
- 1243 ई. में इनका जन्म बगडावत गुर्जर परिवार में हुआ था ।
- पिता : "सवाई भोज"
- माता का नाम – सेढू बाई
- पत्नि – पीपल दे (धार नरेश जय सिंह की पुत्री)
- बचपन का नाम – उदय सिंह
- भिनाय के ठाकुर को मारकर अपने पिता व भाइयों की हत्या का बदला लिया ।
- इन्हें (देवनारायण जी) "विष्णु भगवान का अवतार" माना जाता है ।
- इन्हें "औषधि का देवता" कहा जाता है ।
- आसीन्द (भीलवाडा) व देवमाली (अजमेर) इनके मुख्य मंदिर है ।
- इनके मन्दिर में नीम के पत्ते चढाये जातें है ।
- इनके मन्दिर में मूर्ति नहीं होती बल्कि ईंटो की पूजा की जाती है ।
- मेला : "भाद्रपद शुक्ल सप्तमी"
- देवनारायण की फड सबसे बडी व सबसे छोटी फड है ।
- वर्तमान मे जर्मनी के म्यूजियम मे रखी हुई है ।
- यह "जन्तर वाद्य यंत्र" के साथ गुर्जर जाति के भोपें गाते है ।
- 1992 में इस फड पर डाक टिकट जारी हो चुका है । यह राजस्थान के पहले लोक देवता है जिन पर 2011 में 5 रूपये का डाक टिकट जारी हुआ है ।
- उनके घोडे का नाम "लीलागर" था ।

मुख्य मन्दिर :
1. आसीन्द (भीलवाडा)
2. जोधपुरिया (टोंक)
3. देवमाली (अजमेर)

8. देवबाबा

- मुख्य मन्दिर : नगला जहाज (भरतपुर)
- देवबाबा पशु चिकित्सक थें ।
- इन्हें खुश करने के लिए 7 ग्वालों को भोजन करवाना पडता है ।
- देवबाबा की सवारी भैंसा है ।

मेले

- भाद्रपद शुक्ल पंचमी (ऋषि पंचमी के दिन)
- चैत्र शुक्ल पंचमी

9. मल्लीनाथ जी

जन्म – 1358
पिता – राव तीडा (मलखा)
माता – जीणादे
पत्नि – रूपलदे
गुरू – उगम सी

- पालन-पोषण – महेवा के शासक कान्हड देव (चाचा) ने किया ।
- ये "मारवाड के राठौड राजा" थे । मेवा नगर को अपनी राजधानी बनाया ।
- इन्होने राव चूंडा को मारवाड व नागौर जीतने मे सहायता की ।
- मुख्य मन्दिर : तिलवाडा (बाडमेर)
- यहाँ पर चैत्र कृष्ण एकादशी से चैत्र शुक्ली एकादशी तक विशाल मेला लगता है । जहां 15 दिन का "मल्लीनाथ पशु मेला" होता है ।
- इनके नाम पर बाडमेर क्षेत्र का नाम मालानी पडा ।
- मलाणी नस्ल के घोडों का क्रय-विक्रय
- मल्लीनाथ जी "भविष्य दृष्टा" एवं चमत्कारी पुरूष थे ।
- इनकी रानी रूपा दे का मन्दिर मायाजाल (बाडमेर) में है ।
- उगमडी भाटी से योग साधना की दीक्षा ग्रहण की ।

10. तल्लीनाथ जी

मूल नाम – गांगदेव राठौड, जन्म – 1544 ई.
पिता का नाम – वीरमदेव

- ये "शेरगढ (जोधपुर)" के राजा थे ।
- इनके गुरू : जालन्धर नाथ
- मुख्य मंदिर : पांचोटा (जालौर)

राजस्थान की जनजातियाँ

राजस्थान का जनजातियों की जनसंख्या की दृष्टि से भारत में 6 वां स्थान है ।
प्रथम – एम.पी
द्वितीय – महाराष्ट्र
तृतीय – उडीसा
चतुर्थ – बिहार
पंचम – गुजरात

राजस्थान में :-

- जनजातियों की सर्वाधिक जनसंख्या – उदयपुर
- जनजातियों का सर्वाधिक प्रतिशत – बाँसवाडा
- जनजातियों की न्यूनतम प्रतिशत – नागौर
- जनजातियों की न्यूनतम जनसंख्या–बीकानेर

1. कंजर

- कंजर शब्द ''काननचर'' से उत्पन्न हुआ है ।
- कंजर जनजाति अधिकतर ''हाडौती क्षेत्र'' में निवास करती है ।
- 1974 में चाँचेडा रशीद अहमद पहाडी द्वारा प्रसिद्धि दिलायी ।
- इनके मुखिया का पटेल कहा जाता है ।
- इनके घरों के पीछे खिडकियां अनिवार्य होती है ।
- मोर का मांस इन्हे प्रिय है ।
- आराध्य देवता – हनुमान जी
- आराध्य देवी – चौथ माता
- शव का दफनाते है ।
- मरणासन्न व्यक्ति के मुंह में शराब डाली जाती है ।
- महिलाएं चकरी नृत्य करती है ।
- नृत्य के समय जो पायजामा पहनती है उसे ''खुशनी'' कहा जाता है ।
- कंजर जनजाति का मुख्य व्यवसाय चोरी करना
- चोरी करने से पहले देवताओं से आर्शीवाद लेते है । इसे ''पाती माँगना'' कहते है ।
- हाकम राजा का प्याला पीकर कंजर कवि झूठ नही बोलते ।

मुख्य देवता

1. 'जोगणिया माता'– ''कंजरो की कुलदेवी''
2. चौथ माता
3. रक्तदंडी माता
4. हनुमान जी

2. कथौडी

- मूल रूप से महाराष्ट्र की जनजाति है ।
- राजस्थान के उदयपुर जिले में अधिक निवास करती है ।
- ये लोग खैर के पेड से कत्था प्राप्त करते थे इसलिए इन्हें कथौडी कहा जाता है ।
- ये शव को दफनाते है ।
- कथौडी दूध नहीं पीते ये शराब अधिक पीते है ।
- महिलाये भी साथ में शराब पीती है ।
- ये लोग ''बंदर का माँस'' खाते है ।
- महिलाएँ गहने नहीं पहनती है लेकिन ''गोंदना'' बनवाती है ।
- कथौडी महिलाओं द्वारा पहनी जाने वाली साडी ''फडका'' कहलाती है ।
- इनके घरों को खोलरा कहा जाता है ।
- पुरूषों द्वारा मावलिया एवं लावणी नृत्य किया जाता है ।
- दल का नेता 'नायक' कहलाता है ।
- महिलाऐं होली पर होली नृत्य करती है ।
- कथौडी एक संकटग्रस्त (विलुप्तप्राय) जनजाति है जिनके केवल 35–40 परिवार ही बचे है ।
- राजस्थान सरकार इन्हें मनरेगा में 200 दिन का अतिरिक्त रोजगार देती है ।

इनका मुखिया : ''नायक''
मुख्य देवता:
1. डूँगरदेव
2. वाघ देव
3. गम देव
4. भारी माता
5. कंसारी माता

3. डामोर : (डूँगरपुर)

- डूंगरपुर, बांसवाडा और उदयपुर में निवास करती है ।
- एकमात्र जनजाति जो वनों पर आश्रित नहीं है । खेती तथा पशुपालन करते है ।
- अपनी उत्पति राजपूतों से मानते है ।
- इनके मुखिया को ''मुखी'' कहा जाता है ।
- गांव को ''फलां'' कहा जाता है ।
- डूँगरपुर जिले में अधिकतर जनसंख्या निवास करती है ।
- सीमलवाडा पंचायत समिति (डूँगरपुर) को डामरिया क्षेत्र कहा जाता है ।
- डामोर पुरूष एक से अधिक विवाह (बहुविवाह) करते है ।

- वधू मूल्य को ''दापा'' कहा जाता है । (शादी के ऐवज में)
- डामोर पुरूष भी महिलाओं की भाँति गहने पहनते है ।
- डामोर जनजाति की भाषा पर गुजराती भाषा का प्रभाव पडता है ।
- होली के समय ''चाडिया कार्यक्रम'' किया जाता है ।

डामोर जनजाति के मेले :

1. छैला बावजी का मेला – पंचमहल (गुजरात)
2. म्यारस की ऐवडी का मेला – डूँगरपुर

- मुखिया को ''मुखी'' कहा जाता है ।

4. सांसी

- उत्पति सांसमल से मानी जाती है ।
- सबसे अधिक जनसंख्या भरतपुर और झुंझुनू जिले में है ।
- एकमात्र जनजाति जो विधवा विवाह नहीं करती ।
- सांसी जनजाति में 2 उपजाति होती है ।
  1. बीजा
  2. माला
- ''भाखर बावजी'' की कसम खाकर झूठ नहीं बोलते ।
- कूकडी रस्म : विवाह से पहले लडकी के चरित्र की परीक्षा लेते है ।
- सिकोदरी माता इनकी आराध्य देवी है ।

5. गरासिया

सिरोही के आबू, पिण्डवाडा
पाली के बाली → क्षेत्र में अधिक निवास करती है ।

- उदयपुर के गोगुन्दा
- घर घेर कहलाते है ।
- बिखरे गांव पाल कहलाते है ।
- एक ही गांव के फालिया कहलाते है ।
- नक्की झील इनका पवित्र स्थान है यहाँ अस्थियों का विसर्जन करते है ।
- होली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को 'चडिया' कहते है ।
- मृत्यु के 12 वें दिन दाह संस्कार करते है ।
- सफेद पशु व मोर को भी पवित्र मानते है ।

इनमें 3 प्रकार की पंचायत होती है ।

1. मोती न्यात ''बाबोर हाइया'' कहलाते है ।
2. मेनकी न्यात ''माडेरिया''
3. निचली न्यात

- इनमें प्रेम विवाह अधिक होते है । सियावा (सिरोही) गाँव के गणगौर मेले में
- झेला बावरी का मेला, म्यारसी की खाडी का मेला

विवाह के प्रकार

1. मोर बंधिया
2. ताणना (पैसे देकर लाना)
3. पहरावणा (कपडो के बदले)
4. मेलवो (मुकलावा करना)
5. खेवणो (शादी शुदा महिला अपने प्रेमीके साथ शादी करें)
6. सेवा

खेवणों : माला विवाह भी कहते है ।
सेवा : घर जवाई बनवाकर (शादी से पहले) काम करवाते है ।
गरासिया महिलाएँ सुन्दर तथा श्रृंगार प्रिय होती है ।
कुंआरी लडकिया लाख का चूडा पहनती है ।
शादी शुदा हाथी दांत का चूडा पहनती है ।
गरासिया पुरूष + भील महिला – भील गरासिया
गरासिया महिला +भील पुरूष – गमेती गरासिया
मुखिया : सहलोत / पालवी
गरासिया जनजाति की सहकारी संस्था –हेलरू
मृतक का स्मारक – हूरे इनकी स्थापना कार्तिक पूर्णिमा को की जाती है ।

- अनाज की कोठियां सोहरा कहलाती है ।
- मृत्यु भोज कांदिया, मेक या मेह ।
- सामूहिक कृषि थावरी या हारी कहलाई जाती है ।
- इनकी शगुन चीडी डुबकी है जिसकी मकर सक्रांति पर पूजा की जाती है ।

मेले :

1. कोटेश्वर मेला – अम्बाजी(गुजरात)
2. चेतर – विचितर मेला – देलवाडा (सिरोही)

6. सहरिया

निवास : किशनगंज, शाहबाद

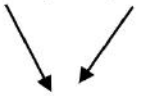

बारां

- भारत सरकार ने सहरिया जनजाति (राजस्थान की एकमात्र आदिम जनजाति) को आदिम जनजाति का दर्जा दिया है ।
- राजस्थान सरकार मनरेगा में 100 दिन का अतिरिक्त रोजगार
  (अकाल में = 250 दिन)
- 3 प्रकार की पंचायत :
  पंचताई (पाँच गाँव की पंचायत)
  एकदसिया (11 गाँव की)
  चौरासी (84 गाँव की)
- चौरासी गाँव की पंचायत - वाल्मीकि मन्दिर (सीताबाडी) में
- सहरिया जनजाति वाल्मीकि को अपना आदिपुरूष मानती है ।
- सहरिया जनजाति में युगल नृत्य नहीं होता ।
- श्राद्ध नहीं करते
- महिलाऐं टैटू बनवाती है लेकिन पुरूष नहीं बनवा सकते
- दहेज प्रथा नहीं है।
- महिलाऐं घर में घूंघट करती है बाहर नहीं करती है ।
- कुल देवी - कोडिया माता
- तेजाजी व भैरूजी की भी पूजा करते है ।
- लठमार होली खेलते है ।
- मकर संक्रांति पर लकडी के डण्डों से लेंगी नामक खेल खेलते है ।
- दीपावली पर हीड गाते है ।
- वर्षा - ऋतु में आल्हा व लहंगी गाते है ।
- मुखियाः कोतवाल
- इनके गाँव को - सहरोल
- छोटी बस्ती को - सहराणा
- हार को - टापरी
- समान रखने की कोठरी को-कुसिला
- गाँव के बीच सामुदायिक केन्द्र होता है । जिसे ढालिया, हथाई, या बंगला कहते है ।
- पेडों पर घर बना कर रहते है ।
- पेडो पर बने घर को गोपना, टोपा, कोरूआ करते है ।
- "धारी संस्कार"(मृतक का) किया जाता है ।
- सहरिया महिलाएं गोदना गुदवाती है और पुरूषों मे मना है ।
- सहरियों में राय नृत्य प्रसिद्ध है ।
- सामूनी संस्था इनके विकास हेतु प्रयास ।

7. भील

- राजस्थान की सबसे प्राचीन जनजाति
- द्वितीय सबसे बडी जनजाति
  - प्रथम मीणा
  - द्वितीय भील
  - तृतीय गरासिया
- उदयपुर जिले में अधिक
- भील शब्द की उत्पति बील तीर-कमान से हुई है ।
- भील जहाँ रहते है उसको भोमट कहते है ।
- इनके घर को - टापरा
- मोहल्ले को - फला
- गाँव को - पाल
- गाँव का मुखिया - पालवी / तदवी
- पूरी भील जनजाति का मुखिया - गमेती
- कुल देवता - टोटम
  (पेड - पौधों का टोटम का प्रतीक मानते है ।)
  पेड-पौधों को साक्षी मानकर विवाह कर लेते है । इसे "हाथीवेण्डो विवाह" कहते है ।
- भील पुरूष हाथीमना नृत्य करते है । (यह नृत्य बैठकर किया जाता है ।)
- होली के दूसरे दिन गैर नृत्य किया जाता है ।
- गौरी भीलों का प्रसिद्ध नृत्य है ।
- बाल-विवाह नहीं होता ।
- विवाह के समय दुल्हा ससुराल में "भराडी माता" विवाह की देवी का चित्र बनाता है ।
- तलाक -"छेडा फाडना"
- यदि कोई महिला अपने पति को छोडकर अन्य पुरूष के साथ रहने लग जाती है तो वह पुरूष उसके पहले पति को "झगडा राशि" देता है ।
- केसरिया नाथ जी की केसर पीकर भील झूठ नहीं बोलते । विवाह पर हिचकी नृत्य करते है ।
- महुआ (पौधे) से बनी शराब पीते है ।
- स्थानान्तरित खेती करते है -"वालरा"
  1. पहाडी में - चिमाता
  2. समतल मैदान में - दजिया
- भीलों द्वारा सामुहिक कोई भी कार्य - "हेलमों"
- रणघोष - "फायरे-फायरे"
- यदि कोई भील किसी घुडसवार सैनिक को मार देता - "पाखरिया" (भील को)
- रक्त मूल्य - मौताणा (किसी के मरने पर)